Indian J. Soc. & Pol. 09 (01) :117-118 : 2022 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JANUARY 2022 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

राजदर्शन के आचार्य : श्री अरविन्द

अखिलेश्वर शुक्ला[1]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, आर0एस0के0डी0पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

श्री अरविन्द के राजनीतिक जीवन का ब्यौरा देने की यहाँ आवश्यकता नहीं। एक ओजस्वी वक्ता तथा पत्रकार के रूप में वे बड़ी ख्याति अर्जित कर चुके थे। राजनीतिक क्षेत्र में गाँधी के पदार्पण के बहुत पहले ही अरविन्द घोषणा कर चुके थे कि विदेशी शासन के विरूद्ध राजनीतिक संघर्ष शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा किया जा सकता है। अपने राजनीतिक कार्य वे बड़ी निष्ठा और दृढ़ता के साथ सत्य और विश्व प्रेम के उन उच्च आदर्शों का पालन करते रहें, जिन्हें पूरी तरह अपना लिया था। उनके राष्ट्रवाद में कोई आक्रामक या अन्ध राष्ट्रवादी तत्व न था, और उनकी अपनी एक ही पुस्तक के शीर्षक द्वारा कहें, तो मानव एकता का आदर्श उनके देश प्रेम को सदा उदात्त बनाता रहा। राजनीतिक स्वाधीनता की व्याख्या वे आध्यात्मिक सम्पूर्णता के अतिरिक्त अन्य किसी रूप में मानने को तैयार न थे। उन्होंने लिखा था– "केवल आत्मा ही रक्षा करती है और हृदय के महान और स्वतन्त्र प्रेम से ही हम राजनीतिक दृष्टि से भी महान् और स्वतन्त्र हो सकते है।"

KEYWORDS : *भारतीय राजदर्शन, दर्शन, धर्म, अध्यात्म*

1908 में अरविन्द को गिरफ्तार करके अलीपुर जेल में रखा गया। इस विश्वास के पर्याप्त कारण हैं कि जेल से छूटने पर उन्हें स्वाधीनता आन्दोलन का निर्विवाद नेता माना जाता, पर अपने बन्दी जीवन में वे अधिकाधिक आध्यात्मिक सिद्धि की ओर खिंचते गए। उनमें एक निर्णायक परिवर्तन हुआ। उन्हें लगा कि अपने सच्चे कर्तव्य से वे अभी तक दूर ही रहे। ईश्वर मेरे कान में कहता जान पड़ा – ''मेरे पास तुम्हारे लिए एक और काम है और उसी के लिए मैं तुम्हें यहाँ लाया हूँ। वह सिखाने के लिए जो तुम अपने आप न सीख सकते थे और अपने काम के लिए तैयार करने के लिए।'' उन्होंने निश्चय किया कि कर्मक्षेत्र को त्याग कर अपने आप को योग की आत्म–विद्या में लगायेंगे और भारत के चिन्तन सन्देश के प्रमाण के लिए अपने आपको तैयार करेंगे।

अरविन्द कुछ दिन तक कलकत्ता के पास चन्द्रनगर में रहे और अप्रैल 1910 में पाण्डिचेरी गये जहाँ उन्होंने अपने जीवन के चालीस वर्ष बिताये। 1914 से 1921 तक उन्होंने 'द आर्य' नामक दार्शनिक पत्रिका प्रकाशित की जिसमें उनकी अधिकाँश महत्वपूर्ण रचनाएं क्रमशः प्रकाशित होती रही।

पाण्डिचेरी में अरविन्द का आश्रम शीघ्र ही संसार भर के दार्शनिकों और आध्यात्मिक अन्वेषियों को आकर्षित करने लगा।कुछ ही वर्षों बाद आश्रम का प्रबन्ध उनकी एक शिष्या मीरा रिचर्ड ने, जो माँ के रूप में प्रसिद्ध हुई,अपने हाथ में ले लिया। समकालीन भारत के कुछेक प्रमुखतम कवियों, चिन्तकों और धर्मसाधकों ने अरविन्द आश्रम में प्रेरणा खोजी और प्राप्त की है। जब 5 दिसम्बर को अरविन्द का देहान्त हुआ तो उन्होंने पीछे ऐसा शिष्य समुदाय छोड़ा जो भारतीय आध्यात्मिकता के असाधारण व्यापक स्तरों का प्रतिनिधि है। विचारों की मौलिकता और महत्व के अलावा भी व्यक्तिगत प्रभाव की उपेक्षा उस व्यक्ति के लिए संभव नहीं जो पिछली दो शताब्दियों में भारतीय चिन्तन दिशाओं को समझना चाहता है। उचित ही, इस युग के महानतम भारतीयों में उनकी गिनती होती है। प्रकाण्ड पण्डित और गहन अर्न्दृष्टि के व्यक्ति होने के साथ ही वे सदा उच्चतम उद्देश्यों में प्रेरित रहे। उनका जीवन पूर्णतः आत्मविजयी और बोध के लिए समर्पित महान् राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व और उससे जुड़े हुए लाखों करोंड़ों लोगों की शक्ति का मोड़ ठुकरा देना कोई छोटा त्याग न था। तभी दार्शनिक और रहस्य साधक के रूप में अरविन्द को उच्चतम स्थान प्राप्त है। यह दुर्भाग्य की बात है कि उनके बहुत से अनुयायी अतिशयोक्ति के मोह में पड़कर उनके नाम को अमोधना में लपेटते रहे है। शताब्दी के भारतीय चिन्तकों में केवल उन्हीं के नाम के साथ चमत्कार और अतिमानवीय तथा रहस्यपूर्ण शक्तियाँ जोड़ी गयी है।3 रामकृष्ण के शिष्य तक उन्हें मसीहा, ईश्वर का अवतार घोषित करने में हिचकते रहे पर अरविन्द के भक्तों ने यही नहीं और भी किया है। सौभाग्यवश अरविन्द की महानता इतनी स्पष्ट है कि उसे ऐसे बैसाखियों की आवश्यकता नहीं है।

श्री अरविन्द पहले राष्ट्रीय चिन्तक थे जिन्होंने सार्वजानिक रूप से यह घोषणा की थी कि भारतीय राजनैतिक आन्दोलन का केन्द्रीय उद्देश्य स्वतन्त्रता है। उन्होंने कहा था '' हमारा आदर्श स्वराज्य है। वह पूर्ण स्वतन्त्रता, जो अंग्रेजी नियन्त्रण से स्वतंत्र हो। हम प्रत्येक, राष्ट्र के, अपनी प्रकृति और आदर्श के अनुसार, निजी शक्तियों द्वारा जीवन जीने की माँग करते हैं। हम विदेशियों की इस चाल का घोर विरोध करते हैं

1: Corresponding Author

जिसके अनुसार वे अपनी सभ्यता हम पर थोपते हैं, जो हमारी सभ्यता से घटिया है।''

जब वे इंग्लैण्ड में थे तब उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता के बारे में विचार भारतीय मजलिस के सम्मुख एक प्रभावशाली भाषण में प्रकट किए और एक संस्था, 'कमल और कटार' की स्थापना इसी उद्देश्य के लिए किया। दुर्भाग्यवश इस संस्था की बैठक केवल एक बार ही हुई, परन्तु इस भाषण में प्रकट हुए उनके विचार अंग्रेज गुप्तचर एजेन्सी तक पहुँच गये थे जिसका जिक्र उनके आई0सी0एस0 में चयन करने का फैसला करते समय चयन समिति के सदस्यों की कार्यवाही से प्रगट हो जाता है।

इंग्लैंण्ड से वापस भारत आने के पश्चात् वह बड़ौदा नरेश के दीवान और प्राध्यापक के रूप में काम करने के बाद उन्होंने अपने क्रान्तिकारी विचारों को निश्चित रूप देना प्रारम्भ किया। उन्होंने बड़ौदा से यतीन बैनर्जी को अपने सहायक के साथ इस उद्देश्य के साथ वर्मा भेजा ताकि वहाँ जाकर वह स्वाधीनता के लिए काम की तैयारी में जुट जायें। इस विषय में एक विस्तृत योजना तैयार की गई। इसको कार्यान्वित करने का काम भी प्रारम्भ हुआ, लेकिन यह साकार रूप ग्रहण न कर सकी। उन के मन मस्तिष्क पर देश की स्वतन्त्रता और देश वासियों के उत्थान का सपना हिलोंरे ले रहा था। इस स्वप्न को साकार करने के लिए वह हर पग पर प्रयत्नशील रहे।

श्री अरविन्द ने बड़ौदा की सरकारी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया और अगस्त 1906 में कलकत्ता में राष्ट्रीय महाविद्यालय की स्थापना हुई और थोड़े से वेतन पर वहाँ के प्राचार्य का पद स्वीकार कर लिया। वहाँ से बंगला पात्रिका 'युगान्तर' का श्रीगणेश किया, जो उनके निर्देश में खुले विद्रोह का प्रचार करती थी। इस में ऐसे अनेक निबन्धों की श्रृंखला का प्रारम्भ किया गया। जिसमें गुरिल्ला युद्ध की शिक्षा दी जाती थी। इस प्रकार भारतीय नौजवानों में शक्ति का संचार करना चाहते थे।

उन्होंने बंगाल से प्रकाशित दैनिक अंग्रेजी पत्र 'वन्दे मातरम्' के सम्पादक का कार्य भी संभाला। उसमें प्रकाशित उनके विचार, प्रेरणादायक और सशक्त होते थे। पत्र के इतिहास में यह एक असाधारण प्रयोग था, जिसका प्रभाव जनमानस पर पड़ा। 'वन्दे मातरम्' देश भक्तों की भावनाओं एवं विचारों का प्रतीक बन गया।

उनके योग सम्पादन की प्रशंसा करते हुए विपिन चन्द्र पाल ने लिखा था। 'वन्दे मातरम्' पत्रिका ने तुरन्त अपने लिए भारतीय पत्रकारिता जगत में निश्चित स्थान प्राप्त कर लिया। महानता का भाव इसमें प्रारम्भ से ही परिलक्षित होता था। इसके साहसिक दृष्टिकोण, तेजस्वी चिन्तन, स्पष्ट विचार, विशुद्ध और सशक्त शैली, तीव्र वाक्य पटुता तक देश की अन्य कोई अंग्रेजी या भारतीय भाषा की पत्रिका नहीं पहुँच सकी। इसके कारण बंगाल की प्रत्येक पत्रिका को अपना स्तर ऊँचा करने के लिए बाध्य होना पड़ा। प्रतिदिन कलकत्ता में ही नहीं अपितु देश के कोने कोने में शिक्षित समाज उत्सुकता से उस समय के गम्भीर प्रश्नों पर पत्र में तेजस्वी वक्तव्यों की प्रतीक्षा करता था। आत्म–केन्द्रित ब्रिटिश प्रेस तक इसकी अवहेलना न कर सका। प्रत्येक सप्ताह 'लंदन टाइम्स' के अन्वय के स्तम्भों में लम्बे–लम्बे गद्यांश उद्धृत किये जाने लगे, इसकी अपनी शक्ति थी, जिसकी अवहेलना देश में कोई न कर सका। श्री अरविन्द इस पत्रिका के केन्द्र स्त्रोत और अग्रणी थे। परन्तु यह सत्य गुप्त रखा गया कि अरविन्द इसका सम्पादन कर रहे है। ताकि ब्रिटिश प्रशासन उन पर सन्देह कर गिरफ्तार न कर ले। फिर भी पता लग ही गया और उन्हें बन्दी बना लिया गया। जेल से निकल कर उन्होंने अपनी राजनीतिक गतिविधियाँ फिर प्रारम्भ कर दीं। क्योंकि उन्होंने संघर्ष को जारी रखने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। उन्होंने फिर दो पत्रिकाएं 'धर्म' बंगला में और 'कर्मयोगी' अंग्रेजी में प्रारम्भ की, जिनसे वह अपनी विचार धारा का अधिक तीव्रता से प्रचार करने लगे। भारतीय जागरण के प्रति उनके मन में बड़ा उत्साह था। राजनीति में काम करते हुए भी श्री अरविन्द अपना ढोल पीटना पसन्द नहीं करते थे। लेकिन अंग्रेज सरकार उनको सन्देह की नजरों से देखती थी। उसने श्री अरविन्द को गिरफ्तार करके उनका नाम देश के कोने कोने में फैला दिया। इस तरह वह एक महाविद्यालय के शिक्षक से बढ़ कर राष्ट्र नेता बन गये। राष्ट्रीय राजनीति में उनका प्रवेश एक असाधारण घटना थी।

REFERENCES

'कर्मयोगिन्' में निबन्ध, 1909

लैंगले द्वारा 'श्री अरविन्द' में उद्धृत, पृ0 16